केन्द्रीय विद्यालय संगठन, एरणाकुलम संभाग

आदर्श प्रश्न पत्र – 2012-13

विषय: हिन्दी (केन्द्रिक)

कक्षा: बारहवीं

पूर्णांक: 100 समय : 3 घंटे

आवश्यक निर्देश ः

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न पत्र में **14** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न पत्र को पढ़ने के लिए **15** मिनट का समय दिया गया है।

खण्ड क

I) निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

याद रख जो आँधियों के सामने भी मुस्कुराते।
वे समय के पंथ पर पद-चिह्न अपने छोड़ जाते।
चिह्न वे जिनको न धो सकते प्रलय धनी भी
मूक रहकर जो सदा भूले हुए को पथ बताते।
किन्तु जो कुछ मुश्किलें ही देख पीछे लौट पड़ते,
जिन्दगी उनकी उन्हें भी भार ही केवल मुसाफिर......
कंटकित यह पंथ भी हो जायेगा आसान क्षण में,
पांव की पीड़ा क्षणिक यदि तू कर अनुभव न मन में
सृष्टि सुख दुख क्या हृदय की भावना के रूप हैं दो,
भावना की ही प्रतिध्वनि गूँजती भू, दिशि, गगन में
एक ऊपर भावना से भी मगर है शक्ति कोई,
भावना भी सामने जिसके विवश व्याकुल मुसाफिर
पंथ पर चलना तुझे तो मुस्कुराकर चल मुसाफिर......।

क) अपने पदचिह्न छोड़कर जाने वाले लोग कौन हैं? **1**

ख) जिन्दगी कब भार प्रतीत होता है? **1**

ग) कवि के अनुसार रास्ते आसान कब हो जाते हैं? **1**

घ) किस शक्ति के सामने भावना विवश और व्याकुल हो जाती है? **1**

च) कवि ने यहाँ मानव को क्या संदेश दिया है? **1**

II) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ः —

आज की दुनिया के संदर्भ में दो बातों का ध्यान रखना जरूरी है। हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहा परफेक्शन का बोलबाला है। हममें से प्रत्येक किसी न किसी के प्रति किसी हद तक जवाबदेह है।

ऐसे परिदृश्य में सबसे कठिन हो जाता है अपनी आलोचना को स्वीकार कर पाना। हालांकि यह भी सच है कि कैसी भी आलोचना स्वीकारना मुश्किल ही होता है भले ही वह हमारी भलाई के लिए क्यों न हो। आलोचना एक दोधारी तलवार की तरह होती है— एक तरफ आप इसके आधार पर अपने झूठे अहं को दरकिनार कर गहरी समझ विकसित कर सकते हैं तो एक तरफ आलोचना को दिल पर ले संबंधित शख्स से अपने संबंध बिगाड़ सकते हैं। कह सकते हैं कि यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह आलोचना को किस तरह लेता है — उससे अपना विकास करता है या झूठे अहं में पड़ अपने को सही ही मानता रहता है।

भले ही आलोचना कितना ही छोटा क्यों न हो जाए लेकिन दूसरे को पूरे ध्यान या गंभीरता के साथ सुनें। आलोचना रूपी सलाह को सिरे से खारिज करने से बेहतर होगा कि जो सही हो उसे आत्मसात करें। उसे स्वीकार कर स्वयं का विकास करें। इस म में अपनी निर्णायक क्षमता का बेहतर इस्तेमाल कर वही बातें स्वीकार करें जो आप पर लागू होती है। ऐसा न हो कि आलोचना का वह हिस्सा भी मान लें जो आप पर लागू ही न होता हो।

भले ही आप कितने ही सफल क्यों न हो जाए लेकिन यह ध्यान रखें कि सुधार की गुंजाइश हमेशा रहती है। इसे मान लेने से सकारात्मक आलोचना अपने हित में लेने की आदत हो जाती है। इसके लिए दिमाग हमेशा खुला रखने की जरूरत है। किसी ने कोई बात की जो आलोचना है तो तुरन्त ही किसी निर्णय पर पहुचने की बजाय उस बात को गंभीरता से मनन करें। ईमानदारी से विचार करें कि कही गई बात में कहीं भी कोई रत्ती भर भी सच्चाई है। आलोचनात्मक टिप्पणी की सारगर्भिता का सही आंकलन परिपक्वता और विकास की दिशा में उठा पहला कदम होता है।

आलोचना दो तरह की होती है। एक का मकसद आपकी कमियों को सामने ला उसे दूर करना होता है जबकि एक महज ईर्ष्यावश या पूर्वाग्रह से ग्रसित होती है। जरूरत इस अंतर को समझने की है। कमियों को इंगित करती यानी सकारात्मक आलोचना को अंगीकार करने की आवश्यकता है तो नकारात्मक आलोचना और उसे करने वाले से दूरी बनाने में ही भलाई निहित है।

1 गद्यांश के लिए एक उचित शीर्षक लिखें। **1**

2 आज की दुनिया के संदर्भ में किन बातों को ध्यान में रखना जरूरी है **1**

3 आलोचना को दोधारी तलवार क्यों कहा गया है **2**

4 आलोचना के प्रति एक व्यक्ति की प्रतिक्रिया कैसी होनी चाहिए **2**

5 सकारात्मक आलोचना को अपने हित में कैसे किया जा सकता है **2**

6 आलोचना कितने तरह की होती है **2**

7 नकारात्मक आलोचनाओं से हमें दूर क्यों रहना चाहिए **2**

8 उपसर्ग/प्रत्यय अलग कीजिए— **2**

क परिदृश्य ख ईमानदारी ग दरकिनार घ विकसित

9 गद्यांश से निम्नलिखित का पर्यायवाची शब्द लिखिए ः **1**

क जरूरत ख शख्स

खण्ड ख

III) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। **5**

क) क्या नहीं कर सकती नारी

ख) खेलकूद में उभरता भारत

ग) आतंकवाद की समस्या

घ) विज्ञान और मानव कल्याण

IV) किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए जिसमें दैनिक जीवन में प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग से होने वाली हानियों के प्रति चिन्ता व्यक्त की गई हो।

अथवा **5**

आपके क्षेत्र में स्थित एक औद्योगिक कारखाने का गंदा पानी आपके नगर की नदी को प्रदूषित करता है। प्रदूषण नियंत्रण विभाग के मुख्य अधिकारी को पत्र द्वारा इस समस्या से अवगत कराइए।

V) अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए — **1×5=5**

1) स्तम्भ लेखन से क्या तात्पर्य है?

2) खोजी पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

3) मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

4) 'बीट रिपोर्टिंग' किसे कहते हैं?

5) पत्रकारिता की भाषा में 'डेस्क' क्या है?

आ) 'सूखते नल' *अथवा* **' फुटपाथ पर सोते लोग'** विषय पर एक **आलेख** लिखिए। **5**

VI) 'एक कामकाजी औरत की शाम' *अथवा* **'बस्ते का बढता बोझ'** विषय पर एक **फीचर** लिखिए। **5**

खण्ड ग

VII) निम्नलिखित पाद्यांशों में से *किसी एक* को पढ़कर उसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

क) विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।
अट्टालिका नहीं है रे
आतंक भवन
सदा पंक पर ही होता जल विप्लव प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से सदा छलकता नीर
रोग शोक में भी हंसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।

1) विप्लव रव से छोटे ही शोभा पाते हैं — इस पंक्ति से कवि का क्या आशय है? **2**

2) 'अट्टालिका' किसका प्रतीक है? उसे आतंक भवन क्यों कहा है? **2**

3. 'जल-विप्लव-प्लावन' पंक पर ही क्यों होता है? 2

4. जलज के बिंब के माध्यम से कवि ने क्या कहने की कोशिश की है? 2

अथवा

ख. जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उड़ेलता हूँ, भर भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है
सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं

1. कवि प्रिय के साथ अपने रिश्ते को किस प्रकार व्यक्त करता है? 2

2. कवि को यह संदेह क्यों हो रहा है कि उनके मन में झरना है? 2

3. 'भीतर वह ऊपर तुम' से कवि का संकेत किसकी ओर है? क्यों? 2

4. कवि 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार अमावस्या' अपने शरीर और चेहरे पर क्यों पाना चाहते हैं? 2

VIII. निम्नलिखित में से *किसी एक* काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

क. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता,
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता,

1. 'और जग और' में निहित अलंकार सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 2

2. 'जग को बना बना कर रोज़ मिटाना'— क्या आशय है? 2

3. कवि का संसार से नाता क्यों नहीं बन पाता? 2

अथवा

ख. प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए वानर निकर।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस।।

1. प्रस्तुत पंक्तियों का संदर्भ लिखें। 2

2. पंक्तियों में प्रयुक्त छंद और भाषा लिखें। 2

3. कवि ने कथा रस के बीच वीर रस का आविर्भाव किस प्रकार चित्रित किया है? 2

IX) निम्नलिखित प्रश्नों मे से *किन्ही दो* प्रश्नों के उत्तर लिखिए — 3+3 = 6

क. 'और ज़बरदस्ती से बात की चूड़ी किस प्रकार मर जाती है?' 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर स्पष्ट करें।

ख. "कैमरे में बंद अपाहिज' नामक कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

ग. "उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र प्रस्तुत करता है"—क्या आप इस कथन से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर लिखें।

X) निम्नलिखित गद्यांशों में से *किसी एक* को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए — 2×4 = 8

क. एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमण्डल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे— मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालीदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और मेघदूत का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?

1. लेखक ने शिरीष की तुलना अवधूत से क्यों की है?
2. वनस्पतिशास्त्री के अनुसार शिरीष जीवन रस कहाँ से खींचता है? लेखक इससे क्यों सहमत थे?
3. लेखक ने कबीर और कालिदास की तुलना शिरीष से क्यों की है?
4. लेखक के अनुसार सच्चा कवि कौन है?

अथवा

ख. अब तक सफिया का गुस्सा उतर चुका था। भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस पर हावी हो रही थी। नमक की पुड़िया ले तो जानी है, पर कैसे? अच्छा, अगर इसे हाथ में ले लें और कस्टमवालों के सामने सबसे पहले इसी को रख दें? लेकिन अगर कस्टमवालों ने न जाने दिया, तो मजबूरी है, छोड़ देंगे। लेकिन फिर उस वायदे का क्या होगा जो हमने अपनी माँ से किया था? हम अपने को सैयद कहते हैं। फिर वायदा करके झुठलाने के क्या मायने? जान देकर भी वायदा पूरा करना होगा। मगर कैसे? अच्छा, अगर इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रख लिया जाए तो इतने कीनुओं के ढेर में भला कौन इसे देखेगा? और अगर देख लिया?

1. सफिया ने सैयदों की क्या विशेषता बताई है?
2. "भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस पर हावी हो रही थी।"— स्पष्ट करें।
3. नमक ले जाने के लिए सफिया ने क्या उपाय सोचा?
4. सफिया के मन में क्या अंतर्द्वन्द्व था?

XI) निम्नलिखित में से *किन्ही चार* प्रश्नों के उत्तर लिखिए — **3×4 = 12**

1. डॉ अंबेड़कर के अनुसार जाति प्रथा श्रम विभाजन का ही एक रूप क्यों नहीं मानी जा सकती?
2. नीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किन तर्कों से सही ठहराया? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर लिखें।
3. बाज़ार का जादू चढ़ने उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. भक्तिन के आ जाने से लेखिका महादेवी वर्मा अधिक देहाती कैसे हो गई?
5. लुट्टन ने ऐसा क्यों कहा कि मेरा गु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है? 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए।

XII) निम्नलिखित प्रश्नों मे के उत्तर 'वितान भाग-2' के आधार पर लिखिए — **2+3**

1. 'जूझ' के लेखक के मन में कविता रचना के प्रति रुचि कब और कैसे पैदा हुई?
2. "सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो राज पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था" — 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

XIII) खाना खाते खाते दादा ने मुझसे वचन ले लिया। पाठशाला ग्यारह बजे होती है। दिन निकलते ही खेत पर हाज़िर होना चाहिए। खेत पर से सीधे पाठशाला पहुचना। सवेरे आते समय ही पढ़ने का बस्ता घर से ले आना। छुट्टी होते ही घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना और कभी खेतों में ज्यादा काम हुआ तो पाठशाला में गैर-हाज़िरी लगाना। ...समझे! मंजूर है का?"

"हाँऽ। खेत में काम होगा तो गैरहाज़िर रहना ही चाहिए।" मैं ऐसे बोल रहा था मानो मुझे सारी बातें मंजूर है। मन आनन्द से उमड़ रहा था।

"हाँऽ। इतना मंजूर हो तो पाठशाला जाना। नहीं तो यह पढ़ना लिखना किस काम का?"

1. उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि लेखक के चरित्र की कौन सी विशेषताओं ने अपको प्रभावित किया? **1**
2. पढाई लिखाई के बारे में लेखक के पिता की क्या राय थी? क्या आप उससे सहमत हैं? क्यों? **2**
3. यदि लेखक की जगह आप होते तो इन हालातों में आपकी प्रतिक्रिया किस प्रकार की होती? कारण सहित लिखिए। **2**

XIV) ऐन फ्रैंक की डायरी को एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज क्यों माना गया है? **5**

अथवा

वर्तमान समय में परिवार की संरचना स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव 'सिल्वर वैड़िग' कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बैठा पाते हैं?